



## अनमोल मोती

### कबीर दास

#### कवि परिचय :

सन्त कबीर दास का जन्म सन् 1398 में काशी के एक हिन्दू-परिवार में हुआ । पर उनका पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक मुसलमान जुलाहा दम्पति ने किया । इसलिए कबीर दास को हिन्दू और मुसलमान-दोनों के गुण मिले । कबीर को किसी विद्यालय में पढ़ने का सुयोग नहीं मिला । लेकिन वे बड़े तेज बुद्धिवाले बालक थे । वे जुलाहे का काम करते थे । दुनिया को देखकर उन्होंने बहुत कुछ सीख लिया । समाज में व्याप्त बुराई को देख उन्हें बहुत दुःख हुआ । लोगों को अच्छी बातें सीखाने के लिए वे कमर कसकर खड़े हो गये । जाति-भेद, धार्मिक अन्धविश्वास और बाहरी क्रिया-कलाप जिसमें आन्तरिक भाव नहीं था - कबीर को पसन्द न आया । उन्होंने लोगों को काम करने, दूसरों के साथ अच्छा बर्ताव करने, बुद्धि और विचार से काम लेने का आग्रह किया । उस समय के हिन्दू और मुसलमान-दोनों संप्रदायों में फैले हुए धार्मिक अन्धविश्वासों, सामाजिक रूढ़ियों, बुरे तथा अमानवीय रीति-रिवाजों एवं कुसंस्कारों को मिटाने को कबीर डट कर खड़े हुए । उन्होंने जाति-धर्म से परे जीवन के मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाया जिसे गृहस्थ और संन्यासी, हिन्दू और मुसलमान, शैव और वैष्णव, शाक्त और योगी एवं सिद्ध आदि स्वीकार कर सकें । कबीर ने तप, तीर्थ, व्रत, सन्ध्या, नमाज आदि के बदले नैतिकता, सदाचार, ज्ञान और भगवत् प्रेम पर जोर दिया ।

‘साखी’ शब्द ‘साक्षी’ का अपभ्रंश रूप है । यह शब्द ज्ञान और अनुभूति का प्रतीक है । यह वह ज्ञान या अनुभूति है जिसे स्वयं कवि ने अपने अन्तःकरण से साक्षात्कार किया है । कबीरदास की साखियाँ इसी ज्ञान और अनुभूति की साक्षी हैं अर्थात् साक्षात्कार करने और करनेवाली हैं ।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है ।

- मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार ।  
तरवर थै फल झड़ि पड़्या, बहुरि न लागै डार ॥
- सोना सज्जन साधु जन टूटि जुँरै सौ बार ।  
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥

शब्दार्थ

मनिषा - मनुष्य । दुर्लभ - मिलना मुश्किल है । देह - शरीर । तरवर - पेड़ ।  
डार- डाली । जुँरै- जुड़ जाते हैं । दरार - फटना या मिटना । धका - धक्का या झोंका ।

इन दोहों को समझें :

1. संसार में मनुष्य का जन्म दुर्लभ होता है । मनुष्य की देह या शरीर बार-बार नहीं मिलता । वृक्ष से फल के एक बार झड़ जानेके बाद यह पुनः उस पेड़ की डाली पर लग नहीं सकता । मतलब यह है कि मानव को समस्त सांसारिक विषय - वासनाओं को त्याग करना चाहिए । इस क्षणभंगुर शरीर के रहते साधना के जरिये ईश्वर की उपासना करनी चाहिए । तभी दुर्लभ मानव-जीवन का सदुपयोग हो सकेगा ।
2. सज्जन और साधुजन सोने जैसे होते हैं जो टूटने के बाद भी सौ बार जुड़ सकते हैं; जबकि दुर्जन या बुरे व्यक्ति कुम्हार के घड़े जैसे होते हैं जो एक धक्के या झटके से टूट जाते हैं । मतलब सज्जन लोग सर्वदा मित्रता बनाये रखते हैं, मगर दुर्जन जरा-सा खटपट होते ही अलग हो जाता है ।

यह भी जानें :

दोहा हिंदी का छोटा-सा छंद है । इसे समझिए और याद कीजिए ।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए ।
  - (क) मनुष्य के जन्म को दुर्लभ क्यों कहा गया है ?
  - (ख) साधुओं और सज्जनों की तुलना किससे की गयी है और क्यों ?
  - (ग) कुम्हार का कुंभ किसे कहा गया है और क्यों ?
  - (घ) कबीरदास के दोहों को 'साखी' क्यों कहा जाता है ?
2. निम्नलिखित अवतरणों का आशय स्पष्ट कीजिए ।
  - (क) मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार ।
  - (ख) दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ।
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।
  - (क) किसके जन्म को दुर्लभ माना गया है ?
  - (ख) कौन-कौन टूट जानेके बाद भी जुड़ सकते हैं ?
4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए ।
  - (क) क्या बार-बार नहीं मिलता ?
  - (ख) सज्जनों की तुलना किससे की गयी है ?
  - (ग) कुम्हार का कुंभ किसे कहा गया है ?
5. कबीरदास के दोहों को कण्ठस्थ कीजिए ।

1. कबीरदास संत थे । काशी में रहते हुए भी उन्होंने देश के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया । अतः उनकी भाषा में विभिन्न प्रदेशों के शब्द पाये जाते हैं । उनकी भाषा में ब्रजभाषा, अवधी, मगही, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी, राजस्थानी, पंजाबी आदि का मेल है । साथ ही बोलचाल के क्षेत्रीय प्रभावों के कारण कबीरदास के कुछ शब्द रूपों में परिवर्तन भी देखने को मिलता है । जैसे- मनुष्य से मनिषा, मन से मनवा या मनुवा आदि । उच्चारण के परिवर्तन से वर्तनी भी बदल जाती है ।

नीचे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं जिनका मूल रूप लिखिए जो आप समझते हैं -

मनिषा -       जुरै -

बहुरि -       धका -

2. निम्नलिखित शब्दों का समानार्थी शब्द लिखिए ।

मनिषा, देह, तरवर, सोना, कुंभ

3. निम्नलिखित शब्दों का विपरीत शब्द लिखिए ।

जनम, दुर्लभ, सज्जन, साधु

4. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

(क) मनिषा जनम \_\_\_\_\_ है, \_\_\_\_\_ न बारम्बार ।

(ख) \_\_\_\_\_ सज्जन साधुजन \_\_\_\_\_ सौ बार ।

(ग) दुर्जन \_\_\_\_\_, एकै धका \_\_\_\_\_ ।

5. निम्नलिखित शब्दों को पाँच-पाँच बार लिखिए ।

कबीर - .....

अनमोल - .....

मोती - .....

दुर्लभ - .....

कुम्हार - .....

(ध्यान दीजिए कि हिन्दी में ह्रस्व और दीर्घ मात्राएँ होती हैं । उनको सही लिखना जरूरी है ।)

